भारत में मानसून की उत्पत्ति और तंत्र :-

→ भारत में मानसून एक जटिल परंतु अत्यंत महत्वपूर्ण मौसमी प्रणाली है जो देश के जलवायु कृषि और अर्थव्यवस्था को गहराई से प्रभावित करती है।

→ "मानसून" शब्द अरबी शब्द मौसिम से लिया गया है, जिसका अर्थ है "ऋतु" या "मौसम"। यह शब्द उन मौसमी पवनों को दर्शाता है जो वर्ष के एक विशेष समय में दिशा बदलती है और वर्षा लाती है।

* मानसून की उत्पत्ति :-

भारतीय मानसून की उत्पत्ति का मुख्य कारण भूमि और समुद्र के बीच तापमान में अंतर है। जब ग्रीष्म ऋतु में सूर्य कर्क रेखा के ऊपर आता है, तब भारतीय उपमहाद्वीप की भूमि तेजी से गर्म हो जाती है। भूमि के अधिक गर्म होने से वहाँ वायुदाब कम हो जाता है, जबकि आस-पास के महासागर जैसे हिन्द महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी का तापमान अपेक्षाकृत कम रहता है, जिससे वहाँ उच्च वायुदाब बनता है। इस दाब अंतर के कारण समुद्र से नमीयुक्त हवाएँ भारत की ओर प्रवाहित होने लगती है।

इसके अतिरिक्त, हिमालय पर्वत और तिब्बत का

vivo Y02
Nov 01, 2025, 13:41

2. बंगाल की खाड़ी शाखा :-

यह शाखा बंगाल की खाड़ी से होकर उत्तर - पूर्व भारत में प्रवेश करती है। मेघालय, असम और पश्चिम बंगाल में भारी वर्षा के बाद यह शाखा गंगा के मैदान से पश्चिम की ओर बढ़ती है।

→ आमतौर पर, दक्षिण - पश्चिम मानसून जून के प्रथम सप्ताह में केरल तट पर प्रवेश करता है और जुलाई के मध्य तक पूरे देश को आच्छादित कर लेता है। सितंबर के अंत तक वर्षा धीरे - धीरे कम होने लगती है।

* शीत ऋतु का मानसून :-

अक्टूबर से जनवरी के बीच जब भूमि ठंडी हो जाती है, तब वहाँ उच्च वायुदाब बनता है। इस समय हवा उत्तर - पूर्व मानसून कहलाता है, जो मुख्य रूप से तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश और दक्षिण - पूर्वी तटीय क्षेत्रों में वर्षा लाता है।

भारत का मानसून केवल एक मौसमी घटना नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों के जीवन का आधार है। यह कृषि उत्पादन, जलस्रोत, ऊर्जा उत्पादन और सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव डालता है। इसकी जटिलता भूमि -

vivo Y02
Nov 01, 2025, 13:44

पठार भी मानसून की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तिब्बती पठार ग्रीष्म में अत्यधिक गर्म होकर एक विशाल निम्न दाब क्षेत्र का निर्माण करता है जो दक्षिणी महासागरीय हवाओं को भारत की ओर आकर्षित करता है।

* मानसून का तंत्र :-

ग्रीष्म ऋतु में जब निम्न वायुदाब का क्षेत्र उत्तर भारत में बनता है तब दक्षिणी गोलार्द्ध की दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक हवाएँ भूमध्य रेखा पार करके भारत की ओर आती हैं। भूमध्य रेखा पार करते समय ये हवाएँ पृथ्वी के घूर्णन (कोरिओलिस बल) के कारण दक्षिण-पश्चिम दिशा में मुड़ जाती हैं। यही हवाएँ भारत में दक्षिण-पश्चिम मानसून कहलाती हैं।

→ यह दक्षिण-पश्चिम मानसून दो शाखाओं में बँट जाती है —

1. अरब सागर शाखा :-

यह शाखा अरब सागर से होकर भारत के पश्चिमी तट पर प्रवेश करती है और पश्चिमी घाट में भारी वर्षा लाती है। इसके बाद यह उत्तर-पश्चिम भारत की ओर बढ़ती है।

vivo Y02
Nov 01, 2025, 13:42

समुद्र तापांतर, वायुदाब परिवर्तन, पृथ्वी के घूर्णन तथा स्थलाकृति के सामूहिक प्रभाव का परिणाम है। वास्तव में मानसून भारत की जलवायु प्रणाली की आत्मा है, जो हर वर्ष नवजीवन और समृद्धि का संदेश लेकर आती है।

vivo Y02
Nov 01, 2025, 13:44